

केजी के रंगों की दुनिया

आर्ट हेरिटेज दीर्घा में लगी केजी सुब्रमण्यन की कलाकृतियों की प्रदर्शनी को देखना एक ऐसे अनुभव से गुजरना है जो आह्लाद से भर देनेवाला है। इस प्रदर्शनी में उनकी कई रिवर्स पेंटिंग्स, गौश और रेखांकन शामिल हैं। ये कलाकृतियां पिछले कुछ वर्षों की हैं। कुछ रेखांकन पर लिखा हुआ है कि वे 2012 के हैं। रिवर्स पेंटिंग्स और गौश भी इसी के इर्द-गिर्द की हैं। हालांकि ये कलाकृतियां अपेक्षाकृत नई हैं लेकिन केजी के कला संसार से परिचित लोगों को मालूम है कि उनके काम में निरंतरता और नयापन दोनों एक साथ रहते हैं। लगता है आप ऐसी नदी को देख रहे हैं जो कहीं दूर से बहती चली आ रही है, साथ ही अपने आसपास के दृश्यों को भी समेटे हुए है।

केजी, जो भारतीय कला जगत में मणि दा के नाम से भी जाने जाते हैं, अपनी कलाकृतियों में भारतीय मिथकों और समकालीन के मेल के लिए चर्चित रहे हैं। वे हनुमान की छवि निर्मित करते हैं, साथ ही पार्श्व में किसी बंदर को भी रखकर अपनी कलाकृति को नया संदर्भ दे देते हैं। जब वे दुर्गा की छवि बनाते हैं तो उसी में आज के मनुष्य को भी रख देते हैं। उनकी कई कलाकृतियां ऐसी भी हैं जो किसी खास देवी या देवता की नही लगती। फिर भी उनमें मिथकीयता है। जैसे उनकी 'डांसिंग आयरकन' को लीजिए। इसमें आठ हाथों, चार पैरों और तीन सिरों वाली एक छवि नृत्य कर रही है। इसमें कुछ पशु और मानव आकृतियां हैं। हो सकता है, केजी ने इस छवि को किसी लोककथा या लोकस्मृति से लिया हो लेकिन वे इसे परिप्रेक्ष्य नया देते हैं। इस तरह की कई और कलाकृतियां इसमें हैं। केजी मिथकीय चेतना, लोक चेतना और समकालीन जीवन को इस तरह मिलाते हैं कि एक नई दृष्ट्यावली बन जाती है। उनकी कुछ कलाकृतियों में मनुष्य का सिर और धड़ किसी पशु या पक्षी का है। ठीक वैसे ही जैसे हयवदन (घोड़े जैसा शरीर और मनुष्य जैसा सिर) जैसी लोककथाएं भारत के कई हिस्सों में प्रचलित हैं। ऐसी भी कलाकृतियां इस प्रदर्शनी में शामिल हैं जिनमें सिर्फ समकालीनता है- जैसे 'गल एग्रेस्ट द स्ट्रीट' नाम की गौश कलाकृति। पर इसमें भी रंगों और छवियों का निर्वह ऐसा है कि लगता है कोई महानगरीय दुनिया लोक संसार में बदल गई है।

केजी भारतीय कला जगत के उन शिखर पुरुषों में हैं जो बंगाल स्कूल की परंपरा से जुड़े हैं और वडोदरा से भी। शांतिनिकेतन से उन्होंने कला की शिक्षा ली और वडोदरा में कला की दीक्षा दी। कई सार्वजनिक म्यूरल उनकी देन हैं। भारतीय कला में जितनी तरह की चाक्षुष विविधताएं उनकी कला में हैं, वह बहुत कम लोगों में है। केजी कलाकार



ही नहीं, बुद्धिजीवी भी हैं। भारतीय कला के भीतर उन्होंने कई बौद्धिक पहलुओं और विमर्शों को प्रखरता दी है। केजी कला गुरु तो रहे ही हैं, वे कई कला परंपराओं के संश्लेषक भी रहे हैं। उनकी प्रदर्शनी यह भी जताती है कि कुछ पुरानी मान ली गई कला शैलियां भी उनके हाथों फिर से नवजीवन पा लेती हैं। रिवर्स पेंटिंग और गौश- दोनों आज वृहत्तर कला संसार में ज्यादा चलन में नहीं हैं लेकिन केजी के हाथों ये विधाएं फिर से अंकुरित हो रही हैं।